फुलवाड़ी

भाग-1

प्रथम वर्गक हेतु मैथिलीक पाठ्य-पुस्तक

एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित।

दिशा-बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राजेश भूषण,** राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **हसन वारिस,** निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., पटना
- **श्री मुखदेव सिंह,** क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक, तिरहुत प्रमण्डल, मुजफ्फरपुर
- **श्री रामेश्वर पाण्डेय,** कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **श्री बसंत कुमार,** शैक्षिक निबंधक, बी. एस. टी. पी. सी., पटना
- **डॉ. सैयद अब्दुल मोइन,** विभागाध्यक्ष, एस. सी. ई. आर. टी., पटना
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य,** शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी,** प्राचार्य, टी. आई. एच. एस., पटना

लेखक सदस्य

- **डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'**
  पूर्व प्रधानाचार्य, प्रोफेसर कॉलोनी, महनार, वैशाली
- **डॉ. दमन कुमार झा,** अध्यक्ष, मैथिली विभाग
  जे० एन० कॉलेज, मधुबनी
- **डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम',**
  पूर्व व्याख्याता मैथिली, राजकीय बालिका उ० मा० वि०, **बाँकीपुर पटना-1**

समीक्षक

- **डॉ. इन्द्रकान्त झा,** पूर्व यूनिवर्सिटी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
  मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना-5
- **डॉ. इन्दिरा झा,** अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
  रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, लोहियानगर, पंटना-20

समन्वयक

- **डॉ. अर्चना,** व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना

अभार : यूनिसेफ बिहार

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखाक अनुसार नेना सभकेँ विद्यालय जीवनक संग बाहरक जीवनधारासँ जोड़ब आवश्यक अछि। एहि दृष्टिसँ पाठक निर्धारण कयल गेल अछि। नेना लोकनिक जीवन पर गाम-घर ओ विद्यालयक परिवेशक बीच बनल अथवा बनैत दूरीकेँ कम कयल जा सकैछ। घर-परिवार सेहो हुनका लोकनिक हेतु एक तरहक अनौपचारिक विद्यालयक काज करैत अछि। परिवार आ समाजक बीच हुनक दिनचर्या चलैत रहैत अछि। ओ अपन दादा-दादी आ माता-पिता सँ बहुत किछु सीखैत छथि। एहि सीखबकेँ विद्यालयमे औपचारिक शिक्षाक रूप देल जाइत अछि।

वर्णमालाक संगे-संग ओहिसँ बनल आ जुड़ल शब्द सभक ज्ञान भेला सँ नेना लोकनिक अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ैत अछि। बाल मनोविज्ञानक अनुसार नेना लोकनि मे वस्तु ज्ञान एवं आचार ज्ञानक माध्यमसँ हुनक स्वास्थ्य आ पर्यावरणक चेतनाकेँ जगाओल जा सकैत अछि।

कविता सभ लयात्मक होइत अछि। एहिसँ जीवनकेँ सेहो लयात्मक बनाओल जा सकैत अछि। कथा सभ उपदेशात्मक होइत अछि। प्रत्येक कथा मे एकटा सन्देश होइत अछि जाहिसँ नेना लोकनिक जीवनधाराकेँ सही दिशा देल जा सकैत अछि। अभ्यासक द्वारा नेना लोकनिक सक्रिय सहभागिता प्राप्त कयल जा सकैत अछि। चित्रात्मकतासँ नेना लोकनिमे पढ़बा, लिखबा ओ सिखबाक अभिरुचि बढ़ैत अछि। एवंप्रकारेँ नेना लोकनिकेँ देल जायवाला प्राथमिक शिक्षाकेँ विशेष रुचिगर ओ आकर्षक बनाओल जा सकैछ। शिक्षामे नेना लोकनिक सक्रिय सहभागिता आवश्यक अछि। खेल-खेलक माध्यमे आ नाच-गानक माध्यमे नेना सभक लेल शिक्षा सहज रूपेँ ग्राह्य भय जाइत अछि। लयात्मक भेने ओ जिह्वा पर चढ़ि सहजेँ स्मरणीय भय जाइत अछि।

निदेशक

विषयानुक्रम

क्र० सं०	शीर्षक		पृष्ठ सं०
1.	आँजी वर्णमाला (देवनागरी)	...	1–11
2.	शब्द–रचना	...	12–16
3.	छाता (पद्य)	...	17–18
4.	चित्र परिचय	...	19–20
5.	मिथिलाक चिड़ै	...	21
6.	गिनती सीखू	...	22–25
7.	विद्यालय परिसर	...	26–29
8.	घर–आँगन	...	30–33
9.	लताम (चित्रकथा)	...	34–36
10.	मनुक्खक अंग	...	37
11.	पंचतंत्रक कथा	...	38–39
12.	चित्र–परिचय	...	40
13.	दशमी मेला	...	41–43
14.	लकड़िहारा (कथा)	...	44–46
15.	फूलक झगड़ा	...	47–48